

Continuous and Comprehensive Evaluation (निरंतर तथा व्यापक मूल्यांकन)

Continuous Evaluation :->

Meaning :-> इसमें विद्यार्थियों का मूल्यांकन पूरे वर्ष भर या नियमित रूप से अल्पविविध के अन्तराल पर चलता रहता है। इसके अन्तर्गत शिक्षण प्रक्रिया की जांच की जाती है।

Scope :-> 1. जिन शैक्षिक संस्थाओं में ग्रेड-2 अन्तराल पर मूल्यांकन की आवश्यकता पड़ती है।

2. जहाँ आन्तरिक मूल्यांकन व्यवस्था प्रभावपूर्ण व सन्तोषजनक नहीं होती है।

3. जहाँ शिक्षा संस्थान का क्षेत्र व्यापक एवं विस्तृत होता है तथा अनेकों विभागों का मूल्यांकन करना पड़ता है।

Purpose of Continuous Evaluation

1. पूरे ही चुके रिकॉर्ड की चेक करना :->

निरंतर मूल्यांकन का मुख्य उद्देश्य संस्था के सभी रिकॉर्डों की पूरी तरह से जांच करना होता है क्योंकि यह वर्ष पर्यन्त चलता रहता है।

2. भविष्य के लिए नियोजन :->

इसका उद्देश्य रिकार्डों की पूरी तरह जांच करने के बाद उनकी सैसी योजनाएँ बनाना जिससे भविष्य में किसी प्रकार की कठिनाई का सामना न करना पड़े।

3. अशुद्धियों को शीघ्र प्रकट करना :->

निरंतर मूल्यांकन द्वारा शिक्षण-अधिगम में हुई अशुद्धियों का शीघ्र पता लगाया जा सकता है।

4. निरंतर मूल्यांकन द्वारा प्रगति की रिपोर्ट प्रदर्शित करना।

5. शिक्षण-अधिगम से संबंधित मूल्यांकन सुझाव देना।

Comprehensive Evaluation

Comprehension

Meaning :-> यह वर्ष के अंत में किया जाता है, जब सारी शिक्षण-क्रिया समाप्त हो जाती है। यह उन संस्थाओं के लिए उपयोगी है, जहाँ किये गये अध्यापन कार्य सीमित होते हैं।

Features :->

1. विस्तृत मूल्यांकन वर्ष की समाप्ति पर ही किया जाता है।
2. मूल्यांकन का कार्य एक ही निरंतर सत्र में करके पूरा किया जाता है।

Purpose :->

1. To check the allround development of the students.
2. To make some important decisions related to institutions.

3. To improve the teaching-learning process.
4. To make policies regarding curriculum activities.
5. To make plan for the students for their allround development.

Problems of Continuous and Comprehensive Evaluation

1. खचीली :-> यह एक अत्यंत खचीली प्रणाली है जो दोरी संस्थाओं के वजह के अनुकूल नहीं हो सकती।

2. कार्य अस्त-व्यस्त होना :-> समय-2 पर मूल्यांकन करने से छात्रों का दैनिक अध्यापन कार्य प्रभावित होता है।

3. नीरसता :-> मूल्यांकन का कार्य यंत्रवत हो जाता है। कार्य में नीरसता उत्पन्न हो जाती है, क्योंकि मूल्यांकनकर्ता यह जानते हैं कि वर्ष पूरा होने में अभी समय है।

4. अस्वास्थ्यकर संबंध :-> बार-बार मूल्यांकन करने से छात्रों एवं अध्यापकों के बीच अस्वास्थ्यकर संबंध उत्पन्न होने की अधिक संभावना बनी रहती है।

Suggestions for improving quality of learning

1. आकस्मिक जांच :-> मूल्यांकनकर्ता की निधि व समय की सूचना दिए बिना आकस्मिक जांच करनी चाहिए।

2. संक्षिप्त समीक्षा :->

मूल्यांकन का कार्य आरंभ करने से पूर्व पिछले मूल्यांकन के निष्कर्षों की समीक्षा कर लेनी चाहिए।

3. एक ही बैठक में कार्य पूरा करना :->

किसी एक विशेष व्यवहार की जाँच का कार्य जहाँ तक संभव हो, एक ही बैठक में पूरा कर लेना चाहिए।

4. विशेष चिन्हों का प्रयोग :->

दुबारा लिखे गए अंकों की जाँच करते समय विशेष चिन्हों का प्रयोग करना चाहिए।

5. अद्ययापकों में परिवर्तन :->

मूल्यांकन का कार्य निम्न-2 अद्ययापकों द्वारा करना चाहिए ताकि अद्ययापक स्वं व्याप्त मिलकर पक्षपात न करें।

Introduction of scheme of CCE in Haryana

हरियाणा सरकार द्वारा भी मूल्यांकन प्रणाली में सुधार हेतु कई तरह की नीतियाँ निर्धारित की गई हैं ताकि बच्चों की निरंतर प्रगति को बढ़ावा मिल सके। परीक्षा को सत्र के दो भागों में बाँट दिया गया है। अब साल के अंत में ही परीक्षा होती ही है लेकिन सेमेस्टर प्रणाली द्वारा मध्य में भी परीक्षाएँ ली जाती हैं। हरियाणा सरकार ने निरंतर एवं विरहृत दोनों प्रकार की मूल्यांकन प्रणाली को ध्यान में रखकर बच्चों के सर्वांगीण विकास में महत्वपूर्ण भूमिका उठाई की है।

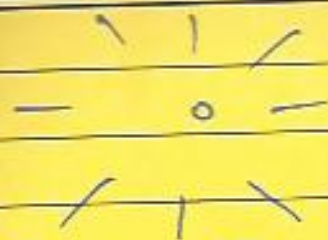
Operational issues for enhancing learning achievement of students :->

सरकार द्वारा अपनाई गई निरंतर एवं विस्तृत मूल्यांकन प्रणाली ने शिक्षण-अधिगम के स्तर में सुधार किया है। क्योंकि इस मूल्यांकन प्रणाली के द्वारा जहां शिक्षकों ने अपनी शिक्षण विधियों को विद्यार्थियों के स्तर अर्थात् उनके गानसिक स्तर के अनुसार परिवर्तित किया है, वहां विद्यार्थी भी अपने मूल्यांकन के प्रति सचेत हो गए हैं और अपना सर्वांगीण विकास करने में सफलता प्राप्त कर रहे हैं।

Importance of Evaluation

निरंतर एवं विस्तृत मूल्यांकन प्रणाली का शिक्षा के क्षेत्र में बहुत महत्वपूर्ण स्थान है क्योंकि इसके द्वारा हम बच्चों की अधिगम क्षमता को बढ़ा सकते हैं। इस मूल्यांकन के महत्वपूर्ण लाभ निम्न प्रकार हैं :->

1. सभी अभिलेखों की पूर्ण रूप से जांच की जा सकती है।
2. अध्यापक अपने मूल्यांकन कार्य की योजना व्यवस्थित ढंग से बना सकते हैं।
3. शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के दौरान होने वाली अशुद्धियों को शीघ्रता से प्रकट किया जा सकता है।
4. शिक्षण अधिगम प्रक्रिया पर पूर्ण नियंत्रण बना सकता है।
5. विस्तृत अपेक्षा उचित समय के अन्दर किया जा सकता है।
6. शिक्षण अधिगम विधियों में सुधार किया जा सकता है।



D.R.M. Sr. Sec. School

Session - 2016-2017

Class - 9th

Subject - Social Science

Name	Oct F ₁	Nov F ₂	Dec F ₃	Jan F ₄	Average
Sonia	15	8	16.5	17	Excellent
Sahil	14	12.5	13	13	Good
Meenu	7	10.5	8	9	Good
Mohid	5	4	3	6	Poor
Toni	9	9.5	4.5	10	Good
Asha	10	13.5	11	14.5	Good
Vishal	17.5	15	18.5	16.5	V. good
Unesh	14	16	17	15	V. good
Andeep	16	12	14	14.5	V. good
Sahil	12.5	10	15.5	14	Good
Sandeep	18	15	-	16	Ex.

Black Board Scheme :->

केंद्रीय सरकार द्वारा प्रयोजित प्रतिमात्मक नाम है - ऑपरेशन ब्लैकबोर्ड। जब हम शिक्षा के स्तर की सुधारने व उसमें गुणवत्ता लाने की बात करते हैं तो अनायास ही, हमारा दृष्टान्त देश के प्राथमिक स्कूलों की ओर चला जाता है जहां न तो अच्छे भवन हैं और न ही अन्य शैक्षिक सुविधाएं। जहां प्राथमिक स्कूलों में एक या दो कमरे हैं भी वे भी असुरक्षित हैं। अधिकतर स्कूल एक अध्यापिका स्कूल (Single Teacher School) हैं। इसीलिए 1986 में बनी गई शिक्षा नीति में एक अभियान आरम्भ करने का एक प्रस्ताव दिया गया जिसका सांकेतिक नाम है - ऑपरेशन ब्लैकबोर्ड।

Meaning :->

Operation :->

'अभियान' शब्द इस कार्यक्रम की आवश्यकता व महत्व को सूचित करता है। अर्थात् इस कार्यक्रम को बड़े जोर-शोर से आरंभ करता है।

Black board :->

'ब्यामपट्ट' शब्द सांकेतिक है जिसका अर्थ है -

1. विद्यालय में शैक्षिक सुविधाएं उपलब्ध कराना।
2. विद्यालय में सीखने संबंधी सामग्री।

योजना की आवश्यकता

(Need of the plan)

प्राथमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के सीखने की मूल आवश्यकताओं को पूरा करना और उपलब्धि के स्तर को बढ़ाना यह आज विश्वभर में चिन्ता का मुख्य विषय है। भारत भी इसका अपवाद नहीं है।

वस्तुतः भारत के संविधान की उपनायें जानें और राज्यों की नीतियों के निर्देशक सिद्धांतों के अन्तर्गत अनुच्छेद 45 के माध्यम से संवैधानिक दायित्व के रूप में 6-14 वर्ष की आयु समूह के सभी बच्चों के लिए सार्वभौमिक प्राथमिक शिक्षा के साथ-2 निम्नलिखित प्रयत्न भी करने चाहिये :-

1. बच्चों के लिए उनके निवास स्थान के निकट शिक्षा की व्यवस्था करना।
2. पाठ्यक्रम को विद्यार्थियों के दैनिक जीवन की आवश्यकताओं से संबंधित करना।

पाठ्यक्रम को समुदाय की आर्थिक समस्याओं और सामाजिक उत्थान बनाने की दिशा में कुछ प्राप्ति हुई है। परंतु सभी विद्यार्थियों को 14 वर्ष की आयु तक विद्यालय में बने रहने तथा स्तर प्राप्त करने के लक्ष्य को अभी तक पाया नहीं जा सका है। स्थिति के लिए कुछ मुख्य कारण इस प्रकार

विद्यालयों में कमरों आदि तथा अन्य अनिवार्य सुविधाओं का पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध न होना अध्यापकों व विद्यार्थियों के लिए अनिवार्य शिक्षण सामग्री का उपलब्ध न होना, विद्यालय छोड़कर जाने वाले विद्यार्थियों की कमी में कमी लाना आवश्यक है, उनकी उपलब्धि के स्तर को उन्नत करने में आने वाली बाधाओं को दूर करना भी उतना ही आवश्यक है। इसी धिंता के परिणामस्वरूप Operation Blackboard की संकल्पना की गई।

Operation Blackboard में सीखने संबंधी सामग्री

1. पाठ्यक्रम, पाठ्यपुस्तकें व शिक्षक संदर्शिकाएँ,
2. संसार, भारत, राज्य तथा जिला के मानचित्र।
3. आवश्यकता-चार्ट, खिलौने तथा प्लास्टिक का एक ग्लोब
4. Tools-Kit जैसे-कैची, हथौड़ा तथा प्लास आदि सामग्री
5. रस्सियाँ व टैपरकार्डर।

6. पुस्तकालय जिसमें प्रत्येक छात्र-छात्रा के लिए की पुस्तकें उपलब्ध हों।
7. दो पत्रिकाएँ जिसमें एक ही बच्चे से संबंधित हो तथा दूसरी अध्यापक के लिए हो।

सामग्री की वित्तीय स्थिति

मद	संख्या	धनराशि
1. शिक्षकों के लिए सामग्री		
(i) सिलेबस	1 सेट	50.00
(ii) पाठ्यपुस्तकें	1 सेट Primary	15.00
(iii) शिक्षक-निर्देशक पुस्तिका	1	15.00
2. कक्षा में शिक्षण - सामग्री		
(i) मानचित्र		175.00
(ii) मानचित्र (जिला, राज्य, देश, विश्व)	प्रत्येक एक	
(iii) एनास्टिक ग्लोब	1 सेट	100.00
(iv) शिक्षणिक चार्ट (स्वास्थ्य, समाजशास्त्र तथा भाषा)	1 सेट	40.00

मद	संख्या	धनराशि (रु.)
3. खेल सामग्री और खिलौने		
(i) समय ब्लॉक	3 सेट	120.00
(ii) पक्षियों जानवरों से संबंधित पहली	3 सेट	60.00
(iii) खिलौने (गाड़ियाँ, आकृति, जानवर, खिलौने)	3 सेट	300.00
4. खेल सामग्री		
(i) कूदों की रस्सी	10	60.00
(ii) गेंद-फुटबॉल, वालीबॉल, रबर-बॉल	2, 2, 10	70, 70, 50
(iii) स्पयर पम्प	1	35.00
(iv) Ring	5	50.00
(v) दोभर सहित झूले की रस्सी	1	35.00
(vi) प्राइमरी विज्ञान किट	1	400.00
(vii) चूटा खोजार बॉल	1	300.00
(viii) गणित किट	1	300.00
(ix) पुस्तकालय के लिए पुस्तकें	2	100.00
5. स्कूल की चंटी		
6. वाद्य यंत्र		
(i) डोल या तबला	1	100.00
(ii) हारमोनियम	1	500.00
(iii) मजीरी	2	50.00

	मद	संख्या	धनराशि
7.	फर्नीचर		
	(i) चटाईयाँ	2 सेट	700.00
	(ii) डिब्बे	2	370.00
8.	श्याप्रपट्ट पिनाअप वीड		
	(i) केनवास	2	400.00
	(ii) चाक और अस्तर	2	50.00
9.	पानी पीने के लिए गिलास		
	(i) घड़ी से पानी निकालने के लिए डिब्बा	10	50.00
	(ii) कचरे के लिए डिब्बे	4	
	Total / कुल योग:-		7215.00

सम्बन्धित उपलब्ध सामग्री :->

अधीन उपलब्ध कराई गई सामग्री के उपयोग के संदर्भ में N.C.E.R.T. द्वारा निम्नलिखित मुद्रित तथा गैर मुद्रित सामग्री तैयार की गई है। यह सामग्री सभी राज्यों और क्षेत्रों में भेज दी गई है।

(क) मुद्रित सामग्री :->

विन्यास कार्यक्रम। अध्यापकों का विस्तृत अभि-
क्रियाशील पैकेज (खण्ड-I)
क्रियाशील पैकेज (खण्ड-II)।

(ख) गैर मुद्रित सामग्री :->

1. 203 रंगीन स्लाइड।
2. 6 कार्यक्रम गणित किट के उपयोग पर।
3. 1 कार्यक्रम कला शिक्षण पर।
4. 1 कार्यक्रम कौल (Braille) विधि पर।
5. कार्यक्रम सृजनोत्सव और सौंदर्यपरक विकास पर।
6. 15 वीडियो कार्यक्रम।
7. 2 कार्यक्रम प्राथमिक विज्ञान किट के उपयोग पर।
8. 2 कार्यक्रम पुस्तकालय की पुस्तकों के उपयोग पर।
9. 1 कार्यक्रम संगीत, लय और गति पर।

* स्टाफ (Staff) :->

नीति में यह कहा गया है कि प्रत्येक प्राथमिक विद्यालय में कम से कम दो कमरे, दो अध्यापक होंगे जिनमें एक महिला होगी। यथासम्भव

इसमें ही प्रत्येक कक्षा के लिए एक-एक शिक्षक की व्यवस्था की जाएगी।

श्यामपट्ट अभियान व 1992 की संशोधित शिक्षा नीति

1992 की संशोधित शिक्षा नीति में कहा गया कि श्यामपट्ट अभियान के क्षेत्र को बढ़ाया जाएगा। इसमें प्रत्येक प्राथमिक विद्यालय के लिए प्रत्येक मौसम में उपयोग के योग्य तीन बड़े कमरों की व्यवस्था का प्रस्ताव दिया गया। शिक्षकों की संख्या को बढ़ाने का प्रस्ताव देते हुए कहा गया कि प्रत्येक विद्यालय में कम से कम तीन शिक्षकों की काम करना चाहिए।

नीति के अनुसार, "अविद्य में अती किये जाने वाले शिक्षकों में कम से कम 50% महिलायें होंगी। ऑपरेशन ब्लैकबोर्ड का विस्तार कर उसे उच्च प्राथमिक स्तर पर भी लागू किया जाएगा। स्कूल भवनों के निर्माण को जवाहर रोजगार योजना में प्राथमिकता दी जाएगी।

यह भी अपेक्षा की गई थी कि अभियान की सफल बनाने में शासन, स्थानीय निकाय, स्वयं-सेवी संस्थाएँ तथा व्यक्तियों की पूरी भागीदारी होगी।

इंग्लिश अग्रिम कार्यक्रम की आवश्यकता एवं महत्व

Need & Importance of Programme operation B.R.

शैक्षिक वातावरण के निर्माण के लिए :->

शैक्षिक वातावरण की प्रक्रिया प्रभावशाली ढंग से चले इसके लिए विद्यालयों में शैक्षिक वातावरण का होना बहुत आवश्यक है। विद्यालय के पास यदि भवन का अभाव है तो सभी मौसमों में बच्चों को बाहर बैठना पड़ता है तो ऐसे वातावरण में न तो अध्यापक ही अपने कर्तव्य का अच्छी प्रकार से पालन कर पाएंगे और न ही बच्चे कुछ सीख पायेंगे।

2. शिक्षा के स्तर को सुधारने के लिए :->

शिक्षा के स्तर को सुधारने के लिए यह आवश्यक है कि प्रत्येक संस्था में पूरे अध्यापक ही तथा पर्याप्त अविद्यमान सामग्री हो। सामग्री के अभाव में अच्छा शिक्षण नहीं हो सकता और अच्छे शिक्षण के बिना शिक्षा के स्तर में सुधार भी नहीं लाया जा सकता।

3. अपठ्यय व अवरोधन की समस्या के समाधान के लिए :->

प्राथमिक स्तर पर अपठ्यय व अवरोधन की समस्या आज प्रत्येक शिक्षाविक का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर रहा है। इस समस्या का मुख्य कारण विद्यालयों में भवन, अध्यापक

एवं अन्य शैक्षिक सुविधाओं का अभाव है। इन सुविधाओं की कमी के कारण विद्यालय छात्रों को रोक रखने में असमर्थ है। इस समस्या का समाधान किए बिना प्राथमिक शिक्षा की सार्वभौमिक बनाने के लक्ष्य को प्राप्त नहीं किया जा सकता है।

4. शिक्षा की सार्वभौमिक बनाने के लिए :->

भारतीय संविधान के अनुसार हमारा लक्ष्य निःशुल्क एवं अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा की व्यवस्था करना है ताकि इसे सार्वभौमिक बनाया जा सके लेकिन सुविधाहीन विद्यालय बच्चों व उनके अभिभावकों को आकर्षित करने में असमर्थ है। अभिभावक बच्चों को विद्यालय भेजने की अपेक्षा उन्हें किसी काम में लगाना उचित समझते हैं। इसीलिए प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमिकरण का लक्ष्य अभी तक प्राप्त नहीं हो पाया है।

अंत में कहा जा सकता है कि इयासपट्ट अभियान एक ऐसा अभियान है जिसको चलाने का उद्देश्य बहुत महत्वपूर्ण है। यदि हम पूर्ण मनोयोग से इस अभियान को सफलतापूर्वक चलाते हैं तो कोई संदेह नहीं की हमारे प्राथमिक विद्यालय आदर्श शिक्षण संस्थाओं के रूप में विकसित होंगे।

मानचित्र :->

मानचित्र पृथ्वी की सतह या इसके एक भाग का पैमाने के माध्यम से चपटी सतह पर खींचा गया चित्र है।

मानचित्र के विभिन्न प्रकार होते हैं :->

1. भौतिक मानचित्र
2. राजनैतिक मानचित्र
3. थिमेटिक मानचित्र
4. रेखाचित्र मानचित्र
5. खाका मानचित्र।

1. भौतिक मानचित्र :->

पृथ्वी की भौतिक आकृतियाँ जैसे- पर्वतों, पठारों, मैदानों, नदियों, महासागरों इत्यादि की दर्शनी वाले मानचित्र को भौतिक मानचित्र कहा जाता है।

2. राजनैतिक मानचित्र :->

राज्यों, नगरों, शहरों तथा गाँवों और विश्व के विभिन्न देशों व राज्यों तथा उनकी सीमाओं की दर्शनी वाले मानचित्र को राजनीतिक मानचित्र कहते हैं।

3. थिमेटिक मानचित्र :->

कुछ मानचित्र विशेष जानकारी प्रदान करते हैं जैसे- सड़क मानचित्र, वर्षा मानचित्र, वन मानचित्र की ही थिमेटिक मानचित्र कहा जाता है।

रेखाचित्र मानचित्र :->

रेखाचित्र एक आरेख है जो स्थानों पर आधारित न होकर स्थानीय प्रक्षेपण पर आधारित होता है जैसे कच्चे आरेख को बिना पैमाने की सहायता से खींचा जाता है इसी को रेखा मानचित्र कहा जाता है।

School Experience

First Week

1st day हम सुबह 8 बजे School में पहुंची और वहां पर पहुंच कर हम स्कूल की Principal से मिली, उनसे

जिलकर हमें बहुत अच्छा लगा और उनसे हमने स्कूल के कतबराज, कार्यक्रम आदि के बारे में वार्तालाप की। School का माहौल बहुत ही अच्छा था। फिर अध्यापकों से बातचीत की, अध्यापकों ने हमारी सहायता की और स्नेहपूर्वक व्यवहार किया।

1. भवन का आकार :->

दृश्य देखने में अत्यन्त सुन्दर है। इस भवन की बाहरी बनावट अच्छी है और इसमें हर प्रकार की सुविधाएँ उपलब्ध हैं।

2. स्मार्ट क्लास रूम :->

रूम भी बनाये गए हैं। स्कूल में दो स्मार्ट क्लास रूम हैं। इसके माध्यम से बच्चों की और अधिक अच्छी प्रकार से पढ़ाया जा सकता है।

2nd Week

Teacher - Student Relation

Teacher :->

अध्यापक एक ऐसा व्यक्ति होता है जो बच्चों की शिक्षा प्रदान करता है और उनकी जीवन में सफल बनाने के लिए मार्गदर्शन करता है। कहा भी गया है :->

जिस देश का शिक्षक महान होता है, वह देश हिमालय के समान होता है। सच मानिए पीकर अमृत जैसा ज्ञान, मानव का जीवन जवान होता है।

Student :-> विद्यार्थी शब्द की शब्दों से मिलकर बना है - विद्यु + अर्थी। इसका अर्थ है - शिक्षा ग्रहण करना।

Relation between Teacher and Student

- i. अध्यापक का स्वभाव प्रभावपूर्ण होना चाहिए और सहनशील भी होना चाहिए।
- ii. विद्यार्थी के अध्यापक एवं अध्यापिकाओं की विद्या-धर्मों से अच्छी तरह से समापन्न होना चाहिए।

अध्यापक तथा विद्यार्थियों के समान उद्देश्य :->

- ज्ञान में वृद्धि करना।
- स्मरण शक्ति को बढ़ाना।
- विश्वसनीय बनाना।

3rd Week

Teaching Learning Materials :->

इस तरह शिक्षण सामग्री जो शिक्षण प्रणाली की पूर्ण करने में सहायक हो जैसे चॉक, डस्टर, प्वाइंटर, मॉडल मैप, रेडियो, चार्ट, श्यामपट्ट, सामान्य वस्तुएं आदि।

Chalk :-> इस विद्यालय के अध्यापक तथा अध्यापिकाएँ चॉक का प्रयोग करती हैं जिससे बच्चों को समझने में आसानी होती है।

Duster :-> श्यामपट्ट पर कार्य करने में झाड़न की महत्वपूर्ण भूमिका है।

Chart :-> इस विद्यालय में अध्यापकों की बच्चों के सही विकास और पूर्ण ज्ञान प्रदान करने के लिए चार्ट का प्रयोग करना पड़ता है।

अन्य सामान्य वस्तुओं का प्रयोग भी किया जाता है जो शिक्षण प्रक्रिया के लिए अनिवार्य है।

4th Week

Test :->

अध्यापकों द्वारा बच्चों का टेस्ट इसलिए लिया जाता है ताकि वह बच्चों का पूर्ण रूप से निरीक्षण कर सकें। यह पता लगाने की उनके द्वारा किया गया कार्य पूर्ण रूप से सही है या नहीं और इससे यह पता चलता है कि बच्चों को कितना समझ में आया है और हमें अपनी कमियों का भी पता चल जाता है ताकि उन्हें दूर किया जा सके।

5th Week

Regularity :->

नियमितता का अर्थ है प्रतिदिन उपस्थित होना। इस विद्यालय में अध्यापिकाओं और विद्यार्थियों की नियमितता के विषय में जानकारी प्राप्त होती है। यहां पर प्रत्येक दिन अध्यापिकाएं अपनी कक्षाएं पूर्ण रूप से लेती हैं।

नियमितता का शिक्षा से अत्यंत गहरा संबंध होता है यदि शिक्षा नियमित रूप से मिलती

रहे तो बच्चों की लगन ख़त्म होनी रहती है।

6th Week

Role of Teacher :->

1. अध्यापकों की बच्चों के कार्य के प्रति रुचि होनी चाहिए।
2. बच्चों को सिखाने के लिए अलग-2 विधियों का प्रयोग।
3. समय-2 पर विद्यार्थियों को कार्य देना चाहिए।
4. विद्यार्थियों की गलतियों में सुधार करवाना चाहिए।
5. विद्यार्थियों के द्वारा भाषायिक योग्यता द्वारा कार्य करने पर बल देना चाहिए।

अतः इससे स्पष्ट होता है कि बच्चों के भविष्य को उज्ज्वल बनाने के लिए एक अध्यापक का अहम योगदान होता है।

7th Week

सामाजिक - सांस्कृतिक प्रोग्राम

D.R.M. Sr. Sec. School में समय-2 पर अनेक सामाजिक-सांस्कृतिक प्रोग्रामों का आयोजन कराया जाता है। इससे बच्चों की अपनी संस्कृति के बारे में पूर्ण रूप से

जनकरी प्राप्त होती है और उन्हें अपनी देश के
अपनी-2 राज्यों की संस्कृति के बारे में ज्ञान प्राप्त
होता है।

अध्यापकों को भी समय-2 पर बच्चों की सांस्कृतिक
प्रवृत्तियों के बारे में बताते रहना चाहिए ताकि बच्चे
अपनी संस्कृतियों के बारे में समझ सकें। समाज के
प्रति कर्तव्य को बच्चों को बताते रहना चाहिए।

8th Week

कक्षा-कक्षा का वातावरण :-> D.R.M. Sr. Sec. School

में सभी अध्यापकों द्वारा बच्चों पर पूर्ण रूप से
नियंत्रण रखा गया है यहां पर सभी कक्षाओं के
अध्यापक अपनी-2 कक्षा की सही प्रकार से सम्भालते
हैं। इसी तरह उन्होंने Pupil Teaching में हमारा भी
बहुत सहयोग किया और हमारे कार्यों
में मदद की ताकि हम अपनी Teaching सही तरह
से पूरी कर सकें।

अध्यापक द्वारा कक्षा पर नियंत्रण :->

1. कक्षा के बेंच तथा कुर्सी सही तरह से लगने
होनी चाहिए।

2. कक्षा में मानचित्र तथा मॉडल की व्यवस्था होनी
चाहिए।

3. कक्षा में शैशवी तथा हवा का उचित प्रबंध होना चाहिए।

9th Week

Test :-> Pupil teacher के द्वारा करवाया गया कार्य का निरीक्षण करने के लिए हमने उनका लिया ताकि इससे पता चल सके कि test करवाया गया कार्य बच्चों को समझ में आ रहा है या नहीं अर्थात् इससे यह भी पता चल जाता है कि कौन-सा बच्चा कमजोर है और कौन-सा सही काम कर रहा है। हमें हमारी कमियों का भी पता चल जाता है और उन कमियों में सुधार किया जा सकता है।

10th Week

खेल प्रतियोगिता :->

शिक्षण प्रक्रिया के 10वें सप्ताह के दौरान स्कूल में वार्षिक खेल महोत्सव मनाया गया। इसमें सभी कक्षाओं के बच्चों ने

बढ़-चढ़ कर भाग लिया। खेल महोत्सव तीन दिवसीय स्तर पर मनाया गया। इसमें सांस्कृतिक कार्यक्रमों की भी सम्मिलित किया गया था और सभी बच्चों ने अपनी अलग-2 प्रतिभागियों का मंचन किया। खेल महोत्सव के तीसरे दिन इनाम वितरण का कार्य सम्पन्न किया गया। इस खेल महोत्सव के मुख्य अतिथि राज्य के खेल मंत्री श्रीमान अनिल बिज थे। उन्होंने खेल प्रतियोगिता समाप्त होने के बाद सभी बच्चों को खेलों में भाग लेने के लिए प्रेरित किया।

AND

11th Week

स्कूल भवन की कमियाँ :->

1. Smart class rooms की

की

कमी होने के कारण विद्यार्थियों को अलग से ज्ञान प्राप्ति में कमी रह जाती है। इसी लिए बच्चों के लिए और अधिक अत्यंत आवश्यक smart class rooms हैं।

2. Science lab में वस्तुओं की कमी के कारण विद्यार्थी अपने कार्य की पूर्ण रूप से जानकारी नहीं प्राप्त कर सकते। इससे बच्चों को श्रवण में अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है।

Water pollution level में स्कूल होने से ठंड पानी की व्यवस्था भी उचित प्रकार से नहीं पाई गई है। यहाँ पर बच्चों की गमियाँ में पानी और बिजली की समस्या बनी रहती है।

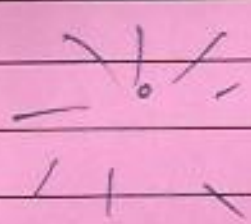
12th Week

परवरी के एक सप्ताह में विभिन्न क्रियाओं का आयोजन करके बच्चों को त्यौहार के महत्व का परिचय कराया गया और इसके अंतर्गत बच्चों के लिए रंगोली का भी आयोजन किया जाता है। त्यौहार हमारे देश में उत्साह के साथ मनाए जाते हैं तथा इसे सभी भारतीय मिल-जुलकर प्रेमपूर्वक मनाते हैं।

15th Week

Annual Function : →

फरवरी माह की शिक्षण प्रक्रिया के दौरान स्कूल का वार्षिक महोत्सव मनाया गया था जिसमें पूरे स्कूल के बच्चे तथा अध्यापकी तथा अन्य सहायक को भी आमंत्रित किया गया था। वार्षिक महोत्सव की तैयारी महोत्सव से 3-4 दिन पहले ही शुरू कर दी गई थी। इसमें स्कूल के मेधावी छात्रों तथा अध्यापकी को सम्मानित किया गया और इसमें सांस्कृतिक कार्यक्रमों को भी सम्मिलित किया गया।



16th Week

निष्कर्ष :->

अतः हम यह कह सकते हैं कि स्कूल में इंटरशिप के दौरान हमें कई अनुभव हुए अर्थात् School Internship

के दौरान स्टाफ का भी सहयोगात्मक रवैया रहा। इस प्रकार से हम कह सकते हैं कि B.Ed. के द्वारा Internship को अत्यंत महत्वपूर्ण

माना गया।

